रविवार 12 अप्रैल, 2020

विषय — क्या पाप, बीमारी और मृत्यु वास्तविक हैं?

स्वर्ण पाठ: हबक्कूक 1 : 12, 13

"हे मेरे प्रभु यहोवा, हे तेरी आंखें ऐसी शुद्ध हैं कि तू बुराई को देख ही नहीं सकता, और उत्पात को देखकर चुप नहीं रह सकता"

उत्तरदायी अध्ययन: **भजन संहिता 103 : 2, 3**
भजन संहिता 19: 12, 13
भजन संहिता 116: 3-5

2 हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना।
3 वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता, और तेरे सब रोगों को चंगा करता है।
12 अपनी भूलचूक को कौन समझ सकता है? मेरे गुप्त पापों से तू मुझे पवित्र कर।
13 तू अपने दास को ढिठाई के पापों से भी बचाए रख; वह मुझ पर प्रभुता करने न पाएं! तब मैं सिद्ध हो जाऊंगा, और बड़े अपराधों से बचा रहूंगा॥
3 मृत्यु की रस्सियां मेरे चारोंओर थीं; मैं अधोलोक की सकेती में पड़ा था; मुझे संकट और शोक भोगना पड़ा।
4 तब मैं ने यहोवा से प्रार्थना की, कि हे यहोवा बिनती सुन कर मेरे प्राण को बचा ले!
5 यहोवा अनुग्रहकारी और धर्मी है; और हमारा परमेश्वर दया करने वाला है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. उत्पत्ति 3 : 1-13

1 यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था, और उसने स्त्री से कहा, क्या
सच है, कि परमेश्वर ने कहा, कि तुम इस बाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना?
2 स्त्री ने सर्प से कहा, इस बाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं।
3 पर जो वृक्ष बाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको
खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे।
4 तब सर्प ने स्त्री से कहा, तुम निश्चय न मरोगे,
5 वरन परमेश्वर आप जानता है, कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल
जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।
6 सो जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के
लिये चाहने योग्य भी है, तब उसने उस में से तोड़कर खाया; और अपने पति को भी दिया, और उसने
भी खाया।
7 तब उन दोनों की आंखे खुल गई, और उन को मालूम हुआ कि वे नंगे है; सो उन्होंने अंजीर के पत्ते
जोड़ जोड़ कर लंगोट बना लिये।
8 तब यहोवा परमेश्वर जो दिन के ठंडे समय बाटिका में फिरता था उसका शब्द उन को सुनाई दिया। तब
आदम और उसकी पत्नी बाटिका के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गए।
9 तब यहोवा परमेश्वर ने पुकार कर आदम से पूछा, तू कहां है?
10 उसने कहा, मैं तेरा शब्द बारी में सुन कर डर गया क्योंकि मैं नंगा था; इसलिये छिप गया।
11 उसने कहा, किस ने तुझे चिताया कि तू नंगा है? जिस वृक्ष का फल खाने को मैं ने तुझे बर्जा था, क्या
तू ने उसका फल खाया है?
12 आदम ने कहा जिस स्त्री को तू ने मेरे संग रहने को दिया है उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया, और
मैं ने खाया।
13 तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा, तू ने यह क्या किया है? स्त्री ने कहा, सर्प ने मुझे बहका दिया तब
मैं ने खाया।

2. मत्ती 9 : 35

35 और यीशु सब नगरों और गांवों में फिरता रहा और उन की सभाओं में उपदेश करता, और राज्य का
सुसमाचार प्रचार करता, और हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।

3. मत्ती 8 : 5-10, 13

5 और जब वह कफरनहूम में आया तो एक सूबेदार ने उसके पास आकर उस से बिनती की।
6 कि हे प्रभु, मेरा सेवक घर में झोले का मारा बहुत दुखी पड़ा है।

7 उस ने उस से कहा; मैं आकर उसे चंगा करूंगा।
8 सूबेदार ने उत्तर दिया; कि हे प्रभु मैं इस योग्य नहीं, कि तू मेरी छत के तले आए, पर केवल मुख से कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा।
9 क्योंकि मैं भी पराधीन मनुष्य हूं, और सिपाही मेरे हाथ में हैं, और जब एक से कहता हूं, जा, तो वह जाता है; और दूसरे को कि आ, तो वह आता है; और अपने दास से कहता हूं, कि यह कर, तो वह करता है।
10 यह सुनकर यीशु ने अचम्भा किया, और जो उसके पीछे आ रहे थे उन से कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि मैं ने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया।
13 और यीशु ने सूबेदार से कहा, जा; जैसा तेरा विश्वास है, वैसा ही तेरे लिये हो: और उसका सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया॥

4. मत्ती 27 : 1, 33 (*से 1st* ,), 35 (वे) (*से 1st* ,), 57-60

1 जब भोर हुई, तो सब महायाजकों और लोगों के पुरनियों ने यीशु के मार डालने की सम्मति की।
33 गुलगुता स्थान कहलाता है पहुंचकर।
35 ... तब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाय।
57 जब सांझ हुई तो यूसुफ नाम अरिमतियाह का एक धनी मनुष्य जो आप ही यीशु का चेला था आया:
उस ने पीलातुस के पास जाकर यीशु की लोथ मांगी।
58 इस पर पीलातुस ने दे देने की आज्ञा दी।
59 यूसुफ ने लोथ को लेकर उसे उज्ज़वल चादर में लपेटा।
60 और उसे अपनी नई कब्र में रखा, जो उस ने चट्टान में खुदवाई थी, और कब्र के द्वार पर बड़ा पत्थर लुढ़काकर चला गया।

5. मत्ती 28 : 1-10

1 सब्त के दिन के बाद सप्ताह के पहिले दिन पह फटते ही मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने आईं।
2 और देखो एक बड़ा भुईंडोल हुआ, क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा, और पास आकर उसने पत्थर को लुढ़का दिया, और उस पर बैठ गया।
3 उसका रूप बिजली का सा और उसका वस्त्र पाले की नाईं उज्ज़वल था।
4 उसके भय से पहरूए कांप उठे, और मृतक समान हो गए।
5 स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, कि तुम मत डरो: मै जानता हूँ कि तुम यीशु को जो क्रुस पर चढ़ाया गया था ढूंढ़ती हो।

6 वह यहाँ नहीं है, परन्तु अपने वचन के अनुसार जी उठा है; आओ, यह स्थान देखो, जहाँ प्रभु पड़ा था।
7 और शीघ्र जाकर उसके चेलों से कहो, कि वह मृतकों में से जी उठा है; और देखो वह तुम से पहिले गलील को जाता है, वहाँ उसका दर्शन पाओगे, देखो, मैं ने तुम से कह दिया।
8 और वे भय और बड़े आनन्द के साथ कब्र से शीघ्र लौटकर उसके चेलों को समाचार देने के लिये दौड़ गई।
9 और देखो, यीशु उन्हें मिला और कहा; 'सलाम'और उन्होंने पास आकर और उसके पाँव पकड़कर उस को दणडवत किया।
10 तब यीशु ने उन से कहा, मत डरो; मेरे भाईयों से जाकर कहो, कि गलील को चलें जाएं वहाँ मुझे देखेंगे॥

6. प्रकाशित वाक्य 21 : 4, 5

4 और वह उन की आंखोंसे सब आंसू पोंछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं।
5 और जो सिंहासन पर बैठा था, उस ने कहा, कि देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं: फिर उस ने कहा, कि लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 475 : 28-31

मनुष्य पाप, बीमारी और मृत्यु के लिए अक्षम है। वास्तविक मनुष्य पवित्रता से विदा नहीं कर सकता, न ही परमेश्वर, जिसके द्वारा मनुष्य का विकास किया गया है, पाप करने की क्षमता या स्वतंत्रता प्रदान करता है।

2. 472 : 24 (सब)-15

सारी वास्तविकता ईश्वर और उसकी रचना, सामंजस्य और शाश्वत में है। वह जो बनाता है वह अच्छा है, और जो कुछ भी बना है, उसके द्वारा बनाया गया है। इसलिये पाप, बीमारी, या मृत्यु का एकमात्र वास्तविकता यह भयानक तथ्य है कि अवास्तविकता मानव को वास्तविक लगती है, विश्वास को गलत करती है, जब तक कि भगवान उनके भेस को बंद नहीं करते। वे सत्य नहीं हैं, क्योंकि वे भगवान के नहीं हैं। हम क्रिश्चियन साइंस में सीखते हैं कि नश्वर मन या शरीर के सभी अंतर्ज्ञान भ्रम हैं, न तो वास्तविकता और न ही पहचान के बावजूद वास्तविक और समान प्रतीत होते हैं।

मन का विज्ञान सभी बुराई का निपटारा करता है। सत्य, ईश्वर, त्रुटि का जनक नहीं है। पाप, बीमारी और मृत्यु को त्रुटि के प्रभावों के रूप में वर्गीकृत किया जाना है। मसीह पाप के विश्वास को नष्ट करने के लिए आया था। ईश्वर-तत्त्व सर्वव्यापी और सर्वशक्तिमान है। ईश्वर हर जगह है, और उसके बिना कुछ भी मौजूद नहीं है या उसकी कोई शक्ति नहीं है। मसीह एक आदर्श सत्य है, जो क्रायश्चियन साइंस के माध्यम से बीमारी और पाप को ठीक करने के लिए आता है, और ईश्वर को सभी शक्ति प्रदान करता है। यीशु उस व्यक्ति का नाम है जिसने बीमारों और पापों का उपचार करके और मृत्यु की शक्ति को नष्ट करके, मसीह को प्रस्तुत किया, जो कि अन्य सभी पुरुषों की तुलना में अधिक परमेश्वर का सच्चा विचार है।

3. 394 : 28-14

हमें याद रखना चाहिए कि जीवन ईश्वर है, और यह कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है। क्रिश्चियन साइंस को न समझकर, बीमारों को आम तौर पर इस पर बहुत कम विश्वास होता है जब तक कि वे इसके लाभकारी प्रभाव को महसूस नहीं करते हैं। इससे पता चलता है कि विश्वास ऐसे मामलों में मरहम लगाने वाला नहीं है। बीमार अनजाने में इसके खिलाफ होने के बजाय दुख का पक्ष लेते हैं। वे इसकी वास्तविकता को स्वीकार करते हैं, जबकि उन्हें इससे इनकार करना चाहिए। उन्हें धोखेबाज इंद्रियों की गवाही के विरोध में प्रार्थना करनी चाहिए, और भगवान के लिए मनुष्य की अमरता और शाश्वत समानता को बनाए रखना चाहिए।

महान एग्जम्पलर की तरह, मरहम लगाने वाले को बीमारी के बारे में बोलना चाहिए, क्योंकि आत्मा को कॉरपोरेट इंद्रियों के झूठे सबूतों को साबित करने और मृत्यु दर और बीमारी पर अपने दावों को साबित करने के लिए छोड़ देना चाहिए। एक ही सिद्धांत पाप और बीमारी दोनों को ठीक करता है। जब दैवीय विज्ञान एक कार्तिक मन में विश्वास को खत्म कर देता है, और भगवान में विश्वास पाप में और उपचार के भौतिक तरीकों में सभी विश्वासों को नष्ट कर देता है, तो पाप, बीमारी और मृत्यु गायब हो जाएगी।

4. 400 : 20-23

जब हम अशांत मन को संबोधित करके और शरीर को कोई ध्यान न देकर बीमारी को दूर करते हैं, तो हम यह साबित करते हैं कि अकेला विचार ही दुख पैदा करता है। नश्वर मन सभी पर शासन करता है जो नश्वर है।

5. 184 : 3-5

सत्य बीमारी, पाप और मृत्यु को विनियमित करने के लिए कोई कानून नहीं बनाता है, क्योंकि ये सत्य के लिए अज्ञात हैं और इन्हें वास्तविकता के रूप में मान्यता नहीं दी जानी चाहिए।

6. 533 : 21-5

भगवान के प्रति बहुत अप्रिय, मृत्यु पहले से ही हड्डी और मांस के तेजी से बिगड़ने में पाया जाता है जो एडम से ईव बनाने के लिए आया था। भौतिक जीवन और बुद्धिमत्ता में विश्वास हर कदम पर बदतर होता जा रहा है, लेकिन त्रुटि का एक महत्वपूर्ण दिन है और इसके अंत तक कई गुना बढ़ जाता है।

मनुष्य को त्रुटि के अपने ज्ञान के रूप में जांच कर, सत्य महिला को उसकी गलती कबूल करने की मांग करता है। वह कहती है, "सर्प ने मुझे बहका दिया तब मैं ने खाया;" जितना यह कहा जाता है कि नम्र तपस्या में, "मेरी गलती के लिए न तो मनुष्य और न ही भगवान जिम्मेदार होंगे।" वह पहले ही जान चुकी है कि कॉरपोरल सेंस सर्प है। इसलिए वह पहली बार मनुष्य की भौतिक उत्पत्ति में विश्वास को त्यागने और आध्यात्मिक निर्माण करने के लिए। इसके बाद महिला को यीशु की माँ बनने और पुनर्जीवित उद्धारकर्ता को देखने के लिए सक्षम किया गया, जो जल्द ही ईश्वर की रचना करने वाले मृत्युहीन व्यक्ति को प्रकट करने वाली थी।

7. 45 : 13-21

अपने शारीरिक दफन के तीन दिन बाद उन्होंने अपने शिष्यों के साथ बात की। अत्याचारी लोग अमर सत्य और प्रेम को एक कब्र में छिपाने में असफल रहे। भगवान की जय हो, और संघर्षशील दिलों को शांति मिले! मसीह ने मानव आशा और विश्वास के द्वार से पत्थर को लुढ़का दिया, और ईश्वर में जीवन के रहस्योद्घाटन और प्रदर्शन के माध्यम से, उन्हें मनुष्य के आध्यात्मिक विचार और उनके दिव्य सिद्धांत, प्रेम के साथ संभवतया एक-मानसिक रूप से उन्नत किया।

8. 34 : 20-28

उनका पुनरुत्थान भी उनका पुनरुत्थान था। इससे उन्हें खुद को और दूसरों को आध्यात्मिक नीरसता से दूर रखने और ईश्वर में असीम संभावनाओं की धारणा में अंधे होने में मदद मिली। उन्हें इस जल्दी की आवश्यकता थी, जल्द ही उनके प्रिय मास्टर वास्तविकता के आध्यात्मिक क्षेत्र में फिर से उठेंगे, और उनकी आशंका से बहुत ऊपर उठेंगे। अपने विश्वासयोग्य के लिए पुरस्कार के रूप में, वह उस परिवर्तन में भौतिक अर्थों के लिए गायब हो जाएगा जिसे तब से उदगम कहा जाता है।

9. 426 : 16-32

जब यह जान लिया जाता है कि बीमारी जीवन को नष्ट नहीं कर सकती है, और मृत्यु से पाप या बीमारी से मृत्यु को बचाया नहीं जाता है, तो यह समझ जीवन के नएपन में बदल जाएगी। यह या तो मरने या कब्र से डरने की इच्छा में महारत हासिल करेगा, और इस तरह नश्वर अस्तित्व को नष्ट करने वाले महान भय को नष्ट कर देगा।

मृत्यु में सभी विश्वासों का त्याग और इसके डंक के डर से स्वास्थ्य और नैतिकता के स्तर को अपने वर्तमान उत्थान से बहुत ऊपर उठाया जा सकता है, और हमें ईश्वर में जीवन के प्रति असीम विश्वास के साथ ईसाई धर्म के बैनर को धारण करने में सक्षम करेगा। पाप मौत लाया, और पाप के गायब होने के साथ मौत गायब हो जाएगी। मनुष्य अमर है, और शरीर मर नहीं सकता, क्योंकि पदार्थ के पास समर्पण करने के लिए कोई जीवन नहीं है। पदार्थ, मृत्यु, बीमारी, और पाप नाम की मानवीय अवधारणाएँ नष्ट हो सकती हैं।

10. 248 : 29-32

निःस्वार्थता, अच्छाई, दया, न्याय, स्वास्थ्य, पवित्रता, प्रेम - स्वर्ग का राज्य - हमारे भीतर राज करो, और पाप, बीमारी, और मृत्यु तब तक कम हो जाएगी जब तक वे अंततः गायब नहीं हो जाते।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6